५. भारतीय लोकतंत्र के सम्मुख चुनौतियाँ

लोकतंत्र निरंतर चलनेवाली एक प्रक्रिया है । लोकतंत्र को स्वीकार करने का अर्थ लोकतंत्र अस्तित्व में आया; ऐसा नहीं होता है । अतः लोकतंत्र को बनाए रखने के लिए हमेशा सतर्क रहना पड़ता है। उस प्रकार के प्रयास करने पड़ते हैं । लोकतंत्र को बाधा पहुँचाने वाले खतरों को समय पर पहचानकर लोकतंत्र के माध्यम से ही उनका निराकरण करना आवश्यक होता है । प्रस्तुत प्रकरण में हम भारतीय लोकतंत्र के सम्मुख जो चुनौतियाँ हैं, उनका प्रमुखतः अध्ययन करेंगे । उससे पहले हम विश्व स्तर पर लोकतंत्र के सम्मुख उपस्थित चुनौतियों का संक्षेप में अध्ययन करेंगे ।

• आज विश्व का हर देश अपने-आप को लोकतंत्र का समर्थक बतलाता है परंतु वास्तव में लोगों के अधिकार और स्वतंत्रता को अबाधित रखनेवाला और जनहित को प्रधानता देनेवाला लोकतंत्र बहुत ही कम देशों में देखने को मिलता है। आज जनतंत्र के सामने सबसे बड़ा खतरा सैन्यतंत्र का है । इसलिए विश्व स्तर पर सच्चे लोकतंत्र का प्रचार होना और प्रत्येक देश में उसको स्वीकार किया जाना लोकतंत्र के सम्मुख उपस्थित बड़ी चुनौती है । लोकतंत्र के प्रसार की विश्व स्तर पर यह सबसे बड़ी चुनौती है

गैर लोकतांत्रिक व्यवस्था से लोकतांत्रिक व्यवस्था की ओर यात्रा करनी हो तो किन लोकतांत्रिक संस्थाओं का निर्माण करना होगा ?

• जिन देशों में लोकतंत्र दृढ़ हुआ है; ऐसा हम मानते हैं, वहाँ भी व्यवहार में सीमित लोकतंत्र ही है । भारत जैसे अन्य देशों में भी लोकतंत्र का अर्थ केवल मतदान, चुनाव, शासन व्यवहार और न्यायालय तक ही सीमित माना जाता है परंतु यह लोकतंत्र का राजनीतिक स्वरूप है । यदि लोकतंत्र को जीवनप्रणाली बनाना हो तो लोकतंत्र का विस्तार समाज के विविध क्षेत्रों तक होना चाहिए । इसके लिए समाज के सभी वर्गों का समावेश, सामाजिक संस्थाओं को स्वायत्तता, नागरिकों का सक्षमीकरण, मानवी मूल्यों की रक्षा आदि अनेक मार्गों का अवलंब करना पड़ेगा । सच्चे लोकतंत्र को दृढ़ बनाने के लिए यह कार्य पूर्ण होने की आवश्यकता है ।

बताइए तो ?

लोकतंत्र में राजनीतिक पार्टियाँ चुनाव में सहभागी होकर सत्ता में प्रवेश करती हैं परंतु क्या राजनीतिक पार्टियों के अंतर्गत चुनाव होते हैं ? राजनीतिक पार्टियों को संगठनों के भीतर चुनाव करवाना आवश्यक है, परंतु क्या ऐसे चुनाव होते हैं ?

मेरे सामने उपस्थित प्रश्न...

चीन ने वित्तीय सुधारों को स्वीकार किया। विश्व व्यापार संगठन का सदस्य भी बना परंतु वहाँ एक ही पार्टी का वर्चस्व कैसे हो सकता है ? क्या चीन लोकतांत्रिक देश है ?

• लोकतंत्र की जड़ों को और गहरे ले जाना; यह सभी लोकतांत्रिक देशों के सामने सबसे बड़ी चुनौती है । स्वतंत्रता, समता, बंधुता और न्याय, शांति, प्रगति और मानवतावाद आदि मूल्यों को समाज के सभी स्तरों तक ले जाना आवश्यक है । लोकतंत्र के माध्यम से उसके लिए आवश्यक व्यापक सहमति भी बनाना संभव है । लोकतंत्र को अधिक गहराई तक ले जाने के लिए कुछ सुधारों की आवश्यकता है ।

भारतीय लोकतंत्र के सम्मुख चुनौतियाँ

लोकतंत्र को और अधिक सार्थक बनाने के लिए शासन द्वारा सत्ता का विकेंद्रीकरण करना,

महिला और दुर्बल वर्गों के हितों की रक्षा करने के लिए आरक्षण देना जैसे अनेक उपाय कार्यान्वित किए परंतु उससे क्या नागरिकों के हाथ में वास्तविक सत्ता आ गई ? इस प्रश्न पर सोचना आवश्यक है।

संप्रदायवाद और आतंकवाद : धार्मिक संघर्ष और उससे निर्माण होनेवाला आतंकवाद भारतीय लोकतंत्र के सम्मुख सबसे बड़ी चुनौती है । समाज में धार्मिक शत्रुता और खाई बढ़ने पर सामाजिक स्थिरता नष्ट होती है । आतंकवाद जैसी घटनाओं के कारण लोकतंत्र में लोगों का सहभाग कम हो जाता है ।

वामपंथी उग्रवाद (नक्सलवादी) : नक्सलवाद भारत की एक बहुत बड़ी समस्या है । भूमिहीन किसानों, आदिवासी लोगों पर होनेवाले अन्याय को दूर करने की भावना से नक्सलवाद की शुरुआत हुई । इस नक्सलवाद ने अब उग्र रूप धारण किया है परंतु इसमें किसान और आदिवासियों की समस्याओं का महत्त्व कम हो गया और सरकार को हिंसक पद्धति से विरोध करना, पुलिस पर हमले करना जैसे अनुचित मार्गों का उपयोग नक्सलवादी गुटों द्वारा किया जाता है ।

भ्रष्टाचार : भारत के सार्वजनिक क्षेत्रों में बड़ी मात्रा में भ्रष्टाचार की समस्या दिखाई पड़ती है । राजनीतिक और प्रशासकीय स्तर पर होनेवाले भ्रष्टाचार से सरकार की कार्यक्षमता कम हो जाती है । सरकारी कार्यों में होनेवाली देरी, सार्वजनिक सुविधाओं की घटती गुणवत्ता, विभिन्न वित्तीय घोटालों से लोगों का लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति अविश्वास, असंतोष की भावना बढ़ने लगी है । चुनाव प्रक्रिया में होनेवाला भ्रष्टाचार, फर्जी मतदान, मतदाताओं को प्रलोभन देना, अपहरण करना जैसी घटनाओं से लोगों का लोकतांत्रिक व्यवस्था पर से विश्वास उठ सकता है ।

आपको क्या लगता है ?

राजनीति में प्रचलित परिवारवाद लोकतंत्र के सामने बड़ी समस्या है । राजनीति में एक ही परिवार का एकाधिकार निर्माण होने से लोकतंत्र का क्षितिज (democratic space) सिकुड़ता है । आम लोगों को सार्वजनिक क्षेत्र में सहभाग होने का अवसर नहीं मिलता ।

राजनीति का अपराधीकरण : राजनीतिक प्रक्रिया में आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों की बढ़ती सहभागिता लोकतंत्र के सामने एक गंभीर चुनौती है । आपराधिक पार्श्वभूमि और जिन व्यक्तियों पर भ्रष्टाचार के आरोप हैं; ऐसे व्यक्तियों को कई बार राजनीतिक पार्टियों से उम्मीदवारी दी जाती है: जिससे राजनीति में धन और गुंडागर्दी का महत्त्व बढ़ गया है । चुनाव के समय हिंसाचार से काम लिया जाता है ।

सामाजिक चुनौतियाँ : उपर्युक्त चुनौतियों के अलावा लोकतंत्र के सामने कई सामाजिक चुनौतियाँ भी हैं । बेरोजगारी, व्यसनाधीनता, अकाल, संसाधनों का असमान वितरण, निर्धन-धनवान लोगों के बीच बढ़ती खाई, जातीयता जैसी सामाजिक समस्याओं को हल करना बहुत जरूरी है ।

भारतीय लोकतंत्र को सफल बनाने के लिए क्या कर सकते हैं ?

(१) लोकतंत्र में बहुमत का बड़ा महत्त्व होता है । लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में जिस पार्टी को बहुमत मिलता है; वह पार्टी सत्ता में आ जाती है । संसद में सभी निर्णय बहुमत से लिये जाते हैं । बहुसंख्य समाज का कल्याण करना लोकतंत्र का प्रमुख उद्देश्य है । बहुमत को महत्त्व देते समय जो अल्पमत में और अल्पसंख्यक हैं; उनपर अन्याय भी हो सकता है । यद्यपि लोकतंत्र बहुमत से चलनेवाली सरकार होती है, फिर भी जो लोग अल्पमत में हैं, उनको निर्णय प्रक्रिया में शामिल करना, उनके हित संबंधों के बारे में विचार करना सरकार का एक कर्तव्य है । संक्षेप में; लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में सभी लोगों के विचारों को महत्त्व मिलना चाहिए । साथ ही बहुमत की सरकार केवल बहुसंख्यक समाज वर्ग की ही सरकार न हो । सभी धार्मिक, वांशिक, भाषाई, जातीय वर्गों को लोकतंत्र की निर्णय प्रक्रिया में सहभागी होने का समान अवसर मिलना चाहिए ।

(२) भारतीय न्यायालय राजनीतिक प्रक्रिया को

और अधिक पारदर्शी बनाने हेतु प्रयत्न करते हुए दिखाई देता है । विशेषतः राजनीति का अपराधीकरण होने से रोकने के लिए न्यायालय द्‌वारा अपराधियों को कड़ा दंड देना और राजनीतिक प्रक्रिया में शामिल होने से रोकना जैसे प्रतिबंध लगाए गए हैं ।

(३) भारतीय लोकतंत्र को सफल बनाने के लिए केवल सरकार, प्रशासन और न्यायालयीन स्तर पर प्रयत्न करना पर्याप्त नहीं है । इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर प्रयत्न करने चाहिए । सर्व शिक्षा अभियान, स्वच्छ भारत अभियान, ग्राम समृद्‌धि योजना, स्व-सहयोग गुटों की स्थापना, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना जैसी कई योजनाएँ चलाई जाती हैं । स्त्रियों का राजनीतिक प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए स्थानीय शासन संस्थाओं में स्त्रियों के लिए ५०% स्थान आरक्षित रखे गए हैं ।

(४) यदि भारत में लोकतंत्र को सफल बनाना है तो सभी स्तरों पर नागरिकों की सहभागिता बढ़नी चाहिए । विशेषतः शासन की गतिविधियों के स्तर पर नागरिकों के शामिल होने से सार्वजनिक नीतियों का स्वरूप बदल जाएगा । परस्पर संवादों द्‌वारा उनकी निर्मिति होगी । लोकतंत्र की सफलता के लिए जो लोग सत्ता में नहीं आ पाए हैं; उनके साथ आदान-प्रदान करना आवश्यक है ।

हमें अपने व्यक्तिगत जीवन में समता, स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय, पंथनिरपेक्षता जैसे मूल्यों का सम्मान और संवर्धन करना चाहिए । हम देश के एक जिम्मेदार नागरिक हैं, यह भावना रखने से ही लोकतंत्र सफल होगा ।

स्वाध्याय

3KA775

१. निम्न विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पूर्ण कीजिए ।

(१) लोकतंत्र में ..... चुनाव में शामिल होकर सत्ता में प्रवेश करते हैं ।
(अ) राजनीतिक दल (ब) न्यायालय
(क) सामाजिक संस्था (ड) इनमें से कोई नहीं

(२) विश्व में सभी लोकतांत्रिक देशों के सामने ..... बड़ी चुनौती है ।
(अ) धार्मिक संघर्ष
(ब) नक्सलवादी गतिविधियाँ
(क) लोकतंत्र को और दृढ़ बनाना ।
(ड) अपराधीकरण को महत्त्व

२. निम्न कथन सत्य है या असत्य, सकारण स्पष्ट कीजिए ।

(१) लोकतंत्र को बनाए रखने के लिए जागरूक रहना पड़ता है ।

(२) वामपंथी उग्रवादी आंदोलन में आज किसान और आदिवासियों की समस्याओं का महत्त्व बढ़ रहा है ।

(३) चुनाव में होनेवाले भ्रष्टाचार से लोगों का लोकतांत्रिक प्रक्रिया के प्रति विश्वास उठ सकता है ।

३. अवधारणाओं को स्पष्ट कीजिए ।

(१) वामपंथी उग्रवाद (२) भ्रष्टाचार

४. निम्न प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर लिखिए ।

(१) भारत में लोकतंत्र की सफलता के लिए किन बातों की आवश्यकता है ?

(२) राजनीति का अपराधीकरण होने का क्या परिणाम होता है ?

(३) राजनीतिक प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने हेतु कौन-से प्रयत्न किए जाते हैं ?

उपक्रम

(१) भ्रष्टाचार की रोक-थाम करने के लिए आप कौन-कौन-से उपाय बताएँगे, उनकी सूची तैयार कीजिए ।

(२) 'भारत में आतंकवाद' इस समस्या पर कक्षा में गुटचर्चा का आयोजन कीजिए ।

(३) 'नशील पदार्थों से मुक्ति' इस विषय पर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत कीजिए ।

राजनीति विज्ञान के अध्ययन से....

भारत का प्रत्येक नागरिक, यद्यपि वह गाँव, तहसील अथवा शहर में रहनेवाला हो, प्रतिदिन कई नगरीय और राजनीतिक प्रश्नों से उलझा रहता है । अधिवास प्रमाणपत्र, जाति का प्रमाणपत्र, आधार कार्ड के लिए किससे मिलना चाहिए ? पेयजल, सार्वजनिक स्वच्छता के संदर्भ में कहाँ शिकायत करनी चाहिए ? मकान संबंधी दस्तावेज कहाँ से प्राप्त करें ? सार्वजनिक सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए ? इससे संबंधित जानकारी हमें नागरिकशास्त्र और राजनीति विज्ञान के अध्ययन से मिलती है । अच्छा नागरिक बनने, देश के नागरिक के रूप में हमें अपने अधिकार और कर्तव्यों का बोध इसका अध्ययन करने से होता है । भारत और विदेश में अगर आपको यात्रा करनी हो तो नागरिक के रूप में आवश्यक बोध इस विषय के माध्यम से निर्माण होता है ।

शिक्षा के पश्चात जब आप अपने भविष्य का नियोजन करेंगे, उस समय भी आपको राजनीति विज्ञान की मदद होगी । संघ लोकसेवा आयोग, महाराष्ट्र लोकसेवा आयोग और बैंकों की भर्ती परीक्षाओं के पाठ्यक्रमों में भी भारतीय शासन और राजनीति इन विषयों का समावेश रहता है । आप अपने व्यवसाय या व्यावसायिक अवसर के लिए किसी भी क्षेत्र का चयन करें, राजनीति विज्ञान उसकी नींव है । साथ ही अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, लोक प्रशासन, शांति और संघर्ष जैसे विषयों का अध्ययन राजनीति विज्ञान के बिना नहीं हो सकता । इन अध्ययन विषयों में रोजगार के कई अवसर अब उपलब्ध हैं । ये अवसर केवल अध्यापन और अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में ही नहीं बल्कि सूचना एवं प्रौद्योगिकी, नीति विश्लेषण, राजनीतिक नेताओं के सलाहकार संगठनों में भी उपलब्ध हैं ।

वैश्वीकरण के कारण राजनीति विज्ञान का व्यावहारिक रूप में उपयोग किया जा सकेगा; इसके कई अवसर उपलब्ध हुए हैं । शासन और राजनीति को समझने वाले अनुसंधानकर्ताओं और मध्यस्थ व्यक्तियों की आज राजनीतिक दल, दबाव गुट, गैरसरकारी संगठनों, स्वयंसेवी संगठनों को जरूरत है । राजनीतिक प्रक्रिया और नौकरशाही की जटिलताओं को समझने वाले और विश्लेषणात्मक कौशलप्राप्त व्यक्तियों की सभी क्षेत्रों में आवश्यकता है ।